श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ७

दिसम्बर - २०१९

प्रश्न - पत्र

गुणांक - १००

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. राजा अनंतसिंह ने शत्रुंजय की यात्रा की हस्तितुंड में ..... का प्रासाद बंधवाया ।
२. .....भगवंत को सयोगी गुणस्थान में शुद्ध क्षायिक भाव होते है ।
३. क्षणभर मे भावों की शुद्धि से स्थूल लोभ का चूरा कर सूक्ष्म करती है जिसे ..... कहते है ।
४. देशना के झरने में स्नान करने वाली प्रत्येक आत्मा पवित्र बनकर ..... को पावन करती है ।
५. कौनसी गति में किस किस गति में से जीव आता है वह.....कहलाती है ।
६. ..... की आराधना करने से राजा वीरदत्त को पुत्र के प्राप्ति हुई ।
७. श्री जिनेश्वर देव का पूजन करने से .....बेलों का छेदन हो जाता है ।
८. लूणिग श्रेष्ठी ने रामदेवसूरि के आचार्य पद महोत्सव में .....टंक द्रव्य का खर्च किया ।
९. .....को हेतुवादोपदेशिकि संज्ञा होती है ।
१०. पुण्यशालीओ सचमुच जिनेश्वर की .....प्रसंग पर विविध प्रकार के नृत्य करते हैं ।
११. .....सूत्र में मुनिवरों के आचार आदि की कथायें कही गई है ।
१२. अपने शुद्ध ..... में भावश्रुत का आलंबन लेकर सूक्ष्म विचार का चिंतन करे ।
१३. यह.....पतनशील है फिरभी अत्यंत विशुद्ध है ।
१४. अंचलगच्छ के संगठन के लिये तो उन्हें..... की उपमा दी जा सकती है ।
१५. .....यथाख्यात चारित्र वाला होता है ।
१६. जयसिंह ने दीक्षा ली तब गुरु ने उसका नाम..... रखा ।
१७. वैमानिक देव का जघन्य आयुष्य..... है ।
१८. सम्यगदर्शन वाले जीवों की प्रत्येक क्रिया मोक्ष ..... होती है ।
१९. नवें गुणस्थान के तीसरे भाग में ..... खपाते हैं ।
२०. ध्यान करने तत्पर ध्याता ने अपने शुद्ध आत्मद्रव को एवं..... को जान लिया है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. आज पंचमकाल में तैरना हो तो तैरा जा सकता है, उसके आधार स्तंभ क्या है ?
२. किसका चरित्र का श्रवण करते जेसिंग के हृदय में वैराग्य के अंकुर प्रगट हुए ?
३. कौनसे जीव कितनी और किस किस दिशा से आहार लेते हैं ? उसे क्या कहते हैं ?
४. मैं अरिष्ट नेमि तीर्थंकर की माता हुं, नाम क्या ?
५. जेसिंग को मात्र एक बार पढने से कितनी गाथा कंठस्थ हो गई ?
६. सर्व स्थावर किससे रहित होते हैं ?
७. किस सूत्र में चतुर्विध संघ को मोक्षमार्ग की आराधना कराने वाले विनय, वैराग्य वगैरह पदार्थो का स्वरुप समझाया है ?
८. जयसिंहसूरि के हाथों श्री शत्रुंजयगिरी पर किस जिनालय की प्रतिष्ठा मुख्य है ।
९. सोमचंद ने सवा मण सुवर्ण की प्रतिमा किस भगवान की कराई ?
१०. वनस्पतिकायादि पांच स्थावर को आहार के विषय में क्या होती है ?
११. शांति कलश किस हाथ में ग्रहण करना चाहिये ?
१२. एकत्व, अविचार और सवितर्क रुप तीन विशेषणों से युक्त दूसरे भेदवाला कौनसा ध्यान है ?
१३. श्री जयसिंह सूरि ने कौनसा चरित्र लिखा ?
१४. कौन सा अंग विच्छेद हो गया है ?
१५. क्षपक क्षेणी पर आरुढ हुए क्षपक महात्मा को कौनसा गुणस्थान नही होता ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) हि २) तिरि ३) क्षपयित्वा ४) पुष्प ५) वल्लय ६) दीह ७) निरत ८) श्री ९) भयणा १०) इति ११) अस्तु १२) सिवं १३) दिसि १४) कल्याणभाजः १५) रहिया १६) कोविदै १७) भवतु १८) तदुच्यते १९) च २०) विगले

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) ८० वर्ष	१) छत्रहर्ष	६) श्री नेमिनाथ	६) शुभदत्त
२) आराधर	२) स्नात्रक्रिया	७) मोहणसिंह	७) जेसिंगसूरिजी
३) अतिवृति गुणस्थान	३) द्रौपदी श्राविका	८) तेउकाय	८) वीतराग
४) क्षपक	४) नागपुत्र	९) श्री ज्ञातासूत्र	९) त्रिसेरी पोल
५) पुण्यशाली	५) संज्ञा बिना का	१०) छत्रसेन	१०) नौ भाग

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. छेद सूत्र कितने है ?
२. जीर्ण वस्त्र के समान कितनी प्रकृतियां सयोगी गुणस्थान तक रहती है ?
३. दिगंबरो और श्वेतांबरो के बीच वाद विवाद कौनसे वि.स. में हुआ ?
४. पर्याप्त गर्भज मनुष्य कितने प्रकार के देव बन सकते हैं ?
५. श्री जयसिंह सूरि ने पिलुडा नगर में किस वि.स. में चोमासा किया ?
६. क्रियावादी के कितने भेद हैं ?
७. सूक्ष्म संपराय गुणस्थानक पर सत्ता में कितनी प्रकृति होती है ?
८. बृहदशांति की किस गाथा में अष्टमंगल का उल्लेख है ?
९. सोलह दंडक को कितनी पर्याप्ति होती है ?
१०. राजसेन परमार ने किस वि.स. में जैनधर्म का स्वीकार किया ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. परमार वंश के राऊ सोमिल नाविक का कार्य करने से उसके वंशज परमार गोत्र से पहचाने गये ।
२. सर्व धर्मो में श्रेष्ठ ऐसे जैनशासन की जय जयकार हो ।
३. क्षीण मोह गु.स्था. में रहा हुआ क्षपक श्रेणीवाला साधु अेक योग करके शुक्लध्यान के दूसरे भेद का ध्यान करता है ।
४. जिनागम आत्मा को तीन शल्य से मुक्त बनाने वाले हैं ।
५. ध्याता परमात्व द्रव्य के पर्याय को अथवा उसके कोई एक गुण का निश्चय कर उसका चिंतन करता है ।
६. लोक के अंतिम छोर पर रहे हुए सूक्ष्म स्थावर जीवों को एक या दो दिशाका आहार मिलता है ।
७. दानेश्वरी लालनजी के वंश में राजसेन परमार प्रख्यात दानवीर हो गये ।
८. जेसिंग के जन्म के पहले माता नेढी ने स्वप्न में उसने मंदिर के शिखर पर सुवर्ण कलश चढाया था ।
९. सत्रह प्रकृतियों का आठवे गुणस्थान में क्षय किया ।
१०. क्षीण मोह गुणस्थान में एक सौ एक प्रकृति की सत्ता होती है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. उन्होने अनेक नृपतियों को प्रतिबोध देकर उन्हें जैनधर्म की और मोडा ।
२. उपद्रवों का नाश करने वाला कल्याण हो ।
३. सूरि का उपदेश सुनकर उसका हृदय परिवर्तन हुआ ।
४. आगम निर्वाणरुपी नगर तक पहुंचने के मार्ग रुप कहलाते हैं ।
५. त्रेसठ प्रकृतियों की स्थिती क्षीणमोह गुणस्थानक तक ही है ।
६. कइ जीवों के पास भूत भविष्य का विचार ही नहीं होता ।
७. मुक्तिरुपी लक्ष्मी के सुख को बताने वाली है ।
८. नागपुत्र वास्तव में नाग था ऐसा पट्टावली में दर्शाया है ।
९. पहली गच्छ व्यवस्था संकुचित मानस पर आधारित नहीं थी ।
१०. द्वितीय शुक्लध्यान में स्थित होकर ध्यान करने वाला साधक महात्मा समरसीभाव अपने आत्मअनुभव से धारण करते हैं ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. कोटडा के यदुवंशी सोमचंद २) गति आगति द्वार ३) जिनागम का महत्व समझाओ और वे कितने हैं लिखो
४. अनिवृति गुणस्थान पर खपायी कर्म प्रकृतियां समझाओ ५) स्नात्रक्रिया और शांतिकलश समझाओ

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com